खोजो जानो ओर कहो

पं.समकित शास्त्री खनियाधाना

हे रानियों मै तुम्हारा पति नहीं हुँ मैं तो संत बनना चाहता हुँ मुझे तो उस घड़ी का इंतज़ार है जब मैं जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार करूंगा

एक छोटा बालक अपनी माँ से पिछी के लिए हठ करता है,(दीक्षा लेने की हठ)।

वे कौन थे जिनसे चंद्रगुप्त ने अपने 16 स्वप्नों का फल पूछा था...

वे कौन थे...

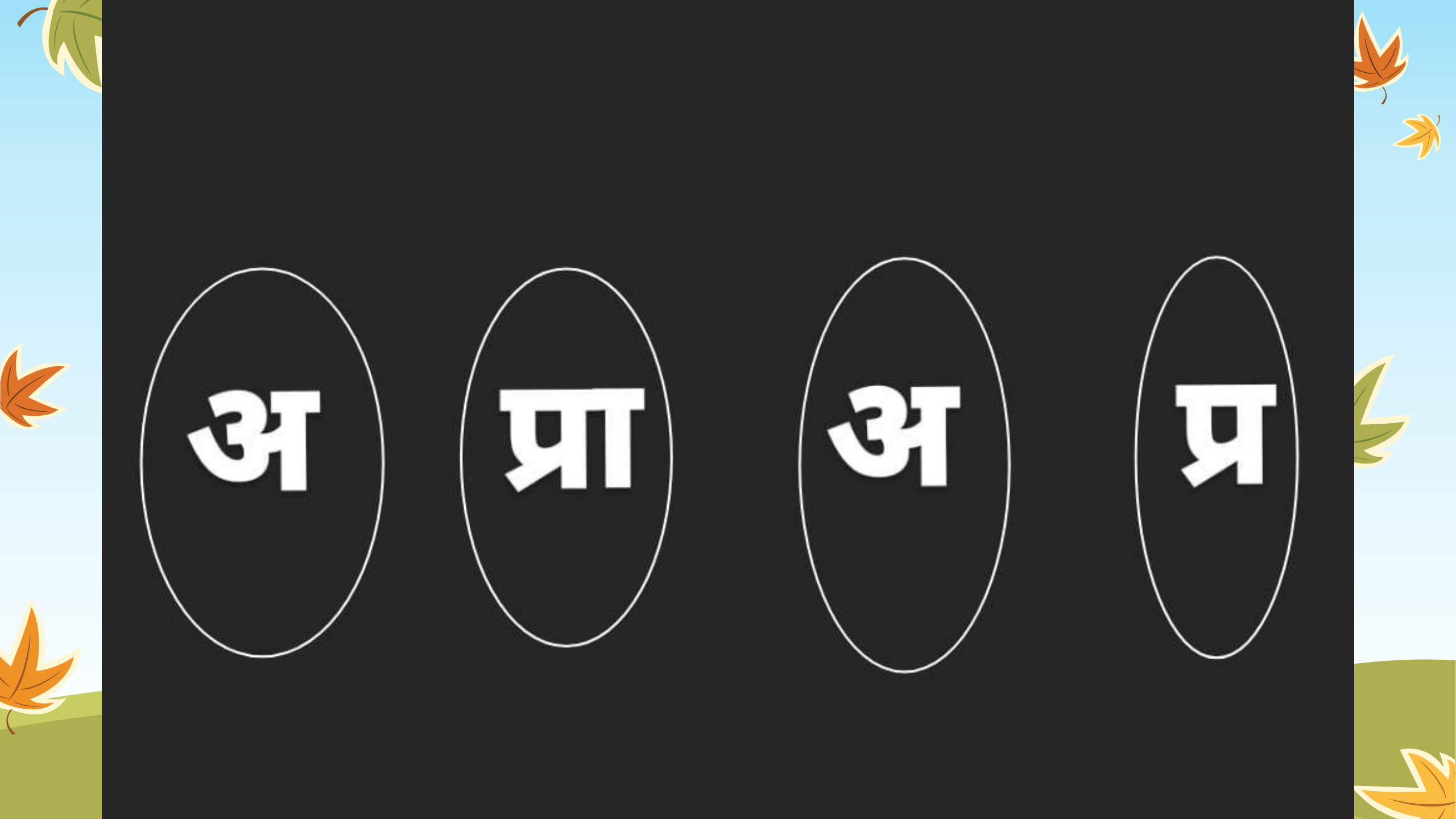
अ
प्रा
अ
प्र

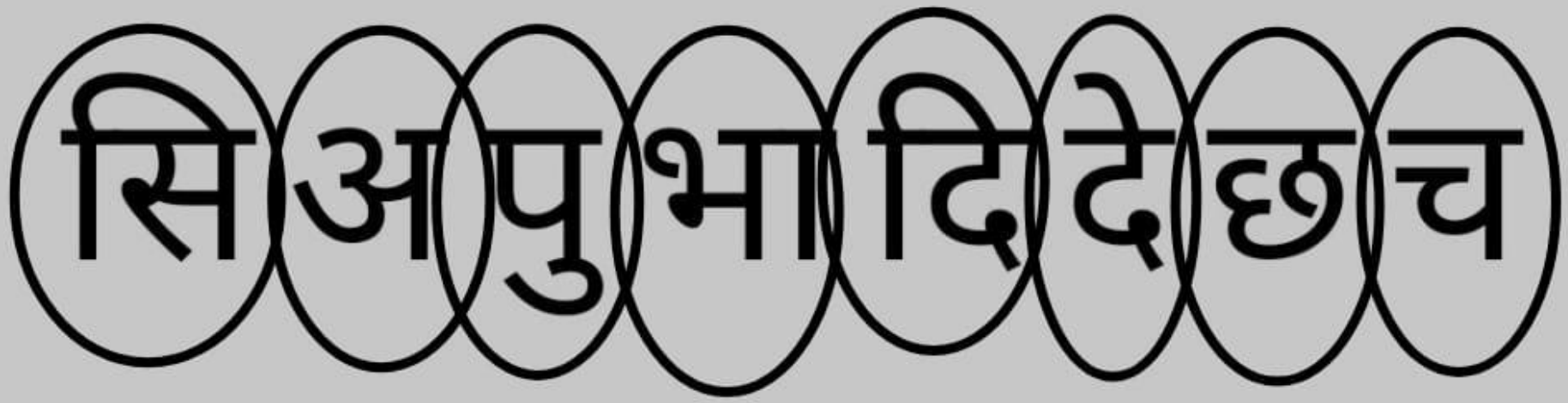
सि अ पु भा दि दे छ च

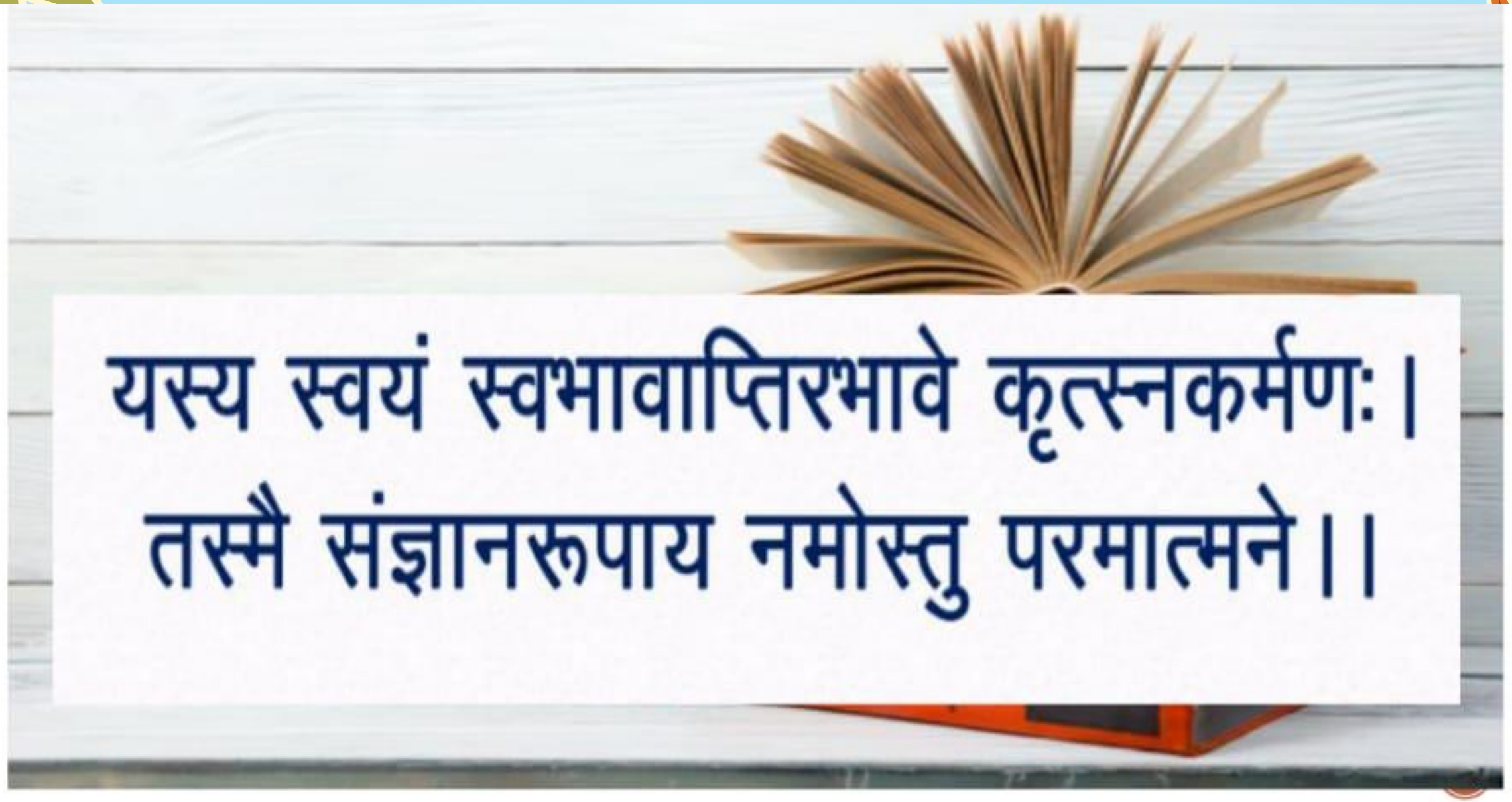
यस्य स्वयं स्वभावाप्तिरभावे कृत्स्नकर्मणः।
तस्मै संज्ञानरूपाय नमोस्तु परमात्मने।।

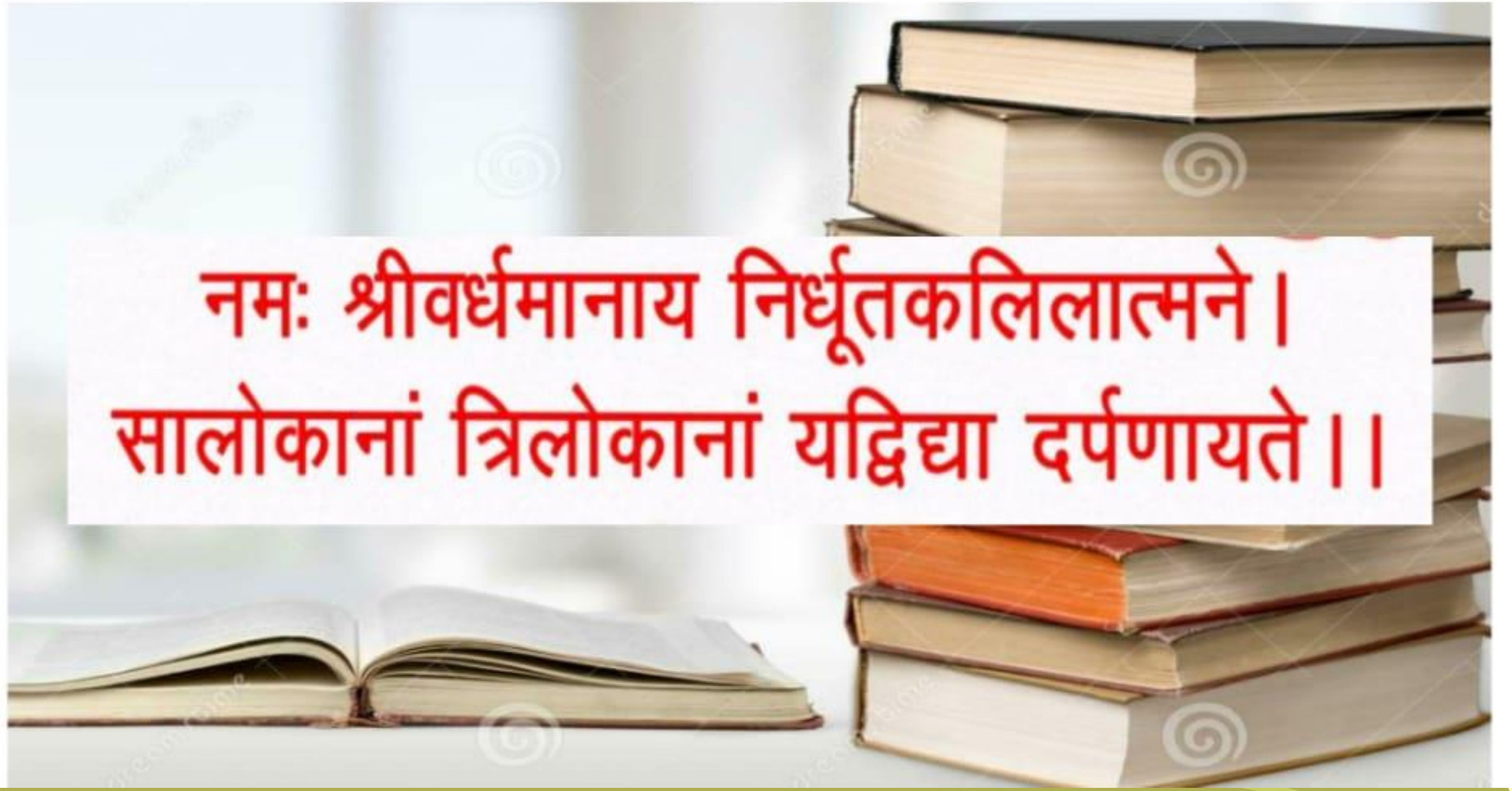
नमः श्रीवर्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्या दर्पणायते।।

प	व	के	णी	प	के	द्य
क	त	त	गि	क	त	स
ल	की	उ	रं	ल	उ	न
ब	टी	आ	त	ब	आ	ल
म्	ल	त	त्म	म्	त	प
क	फ	द	ध्या	क	द	य
र	ख	आ	अ	र	आ	ए
आ	घ	उ	म	आ	उ	ई
ल	ध	म	र	ल	म	ओ
त्यं	वी	प	प	त्यं	प	हु

1. पञ्च बालयति	11.रेवती रानी	21.द्रव्यानुयोग	31.भगवान	41.गजकुमार
2. लेश्या	12.समयसार	22.लब्धिसार	32.पं.टोडरमल जी	42.अक्षय तृतीया
3.मुनिराज	13.तीन लोक	23.मंगतराय जी	33.हिरण	43.भरत
4.उपयोग	14.स्थापना	24.पदार्थ	34.द्रव्य	44.सम्मेदशिखर जी
5.सर्वज्ञ	15.दशलक्षण धर्म	25.हनुमान जी	35.सर्वार्थसिद्धि	45.रत्नकरंड श्रावकाचार
6.भद्रबाहु	16.सती सीता	26.केवल रवि	36.मै महापुण्य उदय से	46.परमात्मा
7.वीतराग	17.357	27.पार्श्वनाथ	37.आचार्य अमृतचन्द्र	47.148
8.महावीर भगवान	18.अकलंक	28.श्रुत पंचमी	38.415	48.भवनवासी
9.आयु कर्म	19.दीवान अमरचंद	29.अनादिनिधन मंत्र	39.निरखो अंग अंग जिनवर	49.कल्पवृक्ष
10.जीवन्धर स्वामी	20.बाहुबली भगवान	30.रानी चेलना	40.प्रमाद	50.राजा राणा छत्रपति

कविवर पं. विक्रमजीतजी द्वारा रचित एक ग्रंथ

प्रवचनसारजी के अनुसार मोह का ही चिन्ह है ऐसा एक भाव

रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले

प्रजा शांति से जिया करै

परम अहिंसा धर्म जगत मे

फैल सर्व हित किया करै

तो बताओ मैं किस जिनवाणी से आई हूँ ....

जय जिनेन्द्र